स्मरण

पं. बनारसी दास चतुर्वेदी

(126वें जन्म दिवस पर)

संचयन

आत्माराम शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

स्मरण

पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

n1634

संचयन

आत्माराम शर्मा

गर्भनाल न्यास का प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner

स्मरण : पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

संचयन : आत्माराम शर्मा

संस्करण : दिसम्बर 2018

मूल्य : रु. 250/-

प्रकाशक : गर्भनाल न्यास, डी.एक्स.ई. 23, मिनाल रेसीडेंसी,
जे.के. रोड, भोपाल-462023 (म.प्र.)
ईमेल : Garbhanaal.Nyas@gmail.com

मुद्रक : दृष्टि ऑफसेट, 37, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
ईमेल : drishtioffset@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

पुरोवाक्

U1634

पण्डित बनारसी दास चतुर्वेदी २०वीं सदी की शुरूआत में भारत के उन लोगों में से एक हैं जो स्वतंत्रता संग्राम को प्रारंभ होता देख रहे थे और उसके समानांतर स्वतंत्र हिंदी पत्रकारिता की चिंता भी उन्हें थी। वे अकेले पत्रकार नहीं थे, उन्हें पत्रकारिता को साहित्य से जोड़े रखने की कला भी आती थी। उन्हें यह भी चिंता थी कि जो भारतीय दूसरे देशों में प्रवास कर गये हैं उनके जीवन के बारे में कैसे जाना जाये। वे अपने समय में स्वतंत्रता संग्राम को इस तरह परख रहे थे कि हमारा देश संग्राम में हुए शहीदों का श्राद्धपूर्वक श्राद्ध कैसे करेगा। उन्हें अपने समय के साहित्य सेवियों की कीर्ति रक्षा की भी गहरी चिंता थी। कहने का आशय यह कि पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी को यदि हम एक 'सेतु-पुरुष' की संज्ञा दें तो अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिये। पत्र व्यवहार उनका शौक था। वे इसके बिना शायद जिये ही नहीं और भारत में वे एक बड़े पत्र संग्रहकर्ता के रूप में जाने गये। उनका पत्र व्यवहार अपने समय के अनेक प्रतिष्ठित विभूतियों से रहा।

वे आज़ादी के पूर्व के जिन व्यक्तित्ववान लोगों के सम्पर्क में आये उनमें महात्मा गांधी, दीनबंधु सी.एफ. एंड्यूज, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर, क्षितिमोहन सेन, काका साहब कालेलकर, धर्मानंद कौसाम्बी, सुभाषचंद्र बोस, पण्डित हजारी प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, राजेंद्र प्रसाद और पुरुषोत्तम दास टंडन आदि प्रमुख हैं। चतुर्वेदी जी के हमउम्र साहित्यकारों में माखनलाल चतुर्वेदी, मुंशी अजमेरी, रामनरेश त्रिपाठी, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, वासुदेव शरण अग्रवाल और किशोरी दास वाजपेयी जैसे लोग रहे हैं। वे दलगत राजनीति में कभी नहीं रहे। उन्हें पंडित जवाहरलाल नेहरू के जमाने में राज्यसभा की सदस्यता भी दी गई थी पर उनका सदन में जाने से मन ऊबता था।

चतुर्वेदी जी को कलकत्ते से निकलने वाले 'विशाल भारत' अखबार के सम्पादक के रूप में भी जाना जाता है। जिसे बाद में हिंदी के आधुनिक कवि सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने भी सम्हाला। 'विशाल

Scanned with OKEN Scanner

अ नु क्र म

H1634

कृतित्व

उपन्यास अंश :	फिजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष	10
सम्पादकीय :	देवनागरी लिपि में सुधार	16
	उपवास का रोग	17
संस्मरण :	मेरे जीवन का सबसे निराला अनुभव	20
	प्रेमचंदजी के साथ दो दिन	26
रेखाचित्र :	ओरछेश की प्रगतिशीलता	31
	धर्मपत्नी को श्रद्धांजलि	36
रिपोर्ताज :	क्रान्तिकारी आज़ाद के अंतिम दर्शन	38
यादें :	कुण्डेश्वर में साढ़े चौदह वर्ष	42
डायरी :	राजेन्द्र-सागर के निर्माण की कहानी	49
पत्र :	अयोध्या प्रसाद गोयलीय के नाम	52
	किशोरीदास वाजपेयी के नाम	53
	नरेश चतुर्वेदी के नाम	54
	पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के नाम	55
	बाबा पृथ्वीसिंह आजाद के नाम	56
	रामचरण हचारण 'मित्र' के नाम	57
	विष्णु प्रभाकर के नाम	57
	हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम	58

स्मृति : पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी

पूज्य और वरेण्य - रामधारी सिंह 'दिनकर'	62
उनके तीन महत्वपूर्ण कार्य - डॉ. रामविलास शर्मा	73
वह अलभ्य प्रेम - विष्णु प्रभाकर	75
बुन्देलखण्ड के स्वप्नदर्शी - डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त	83

Scanned with OKEN Scanner

दूरदृष्टा पत्रकार - मायाराम सुरजन
शहीदों के शुभचिन्तक - श्रीमती रजनी तिवारी 88
एक स्वच्छन्द जीवन - कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर 89
जिन्दा-दिल और सूझ के धनी - सूर्यनारायण व्यास 92
अथक साधक - भगवान सिंह 97
अराजकवादी - प्रभाकर माचवे 100
जैसा मैंने देखा - सीताराम सेकसरिया 104
कुंडेश्वर की स्मृतियां - शिवानी 107
उनका योगदान - रवीन्द्र 111
दादा - अमृतलाल चतुर्वेदी 115
उनकी साहित्य-सेवा का उद्देश्य - शिवकली रूसिया 118
बहुमुखी जीवन के धनी - यशपाल जैन 122
मेरे मार्गदर्शक - कमला चौधरी 125
गांधी भवन के प्रेरणा-स्रोत - कामताप्रसाद सक्सेना 133
सहज संवेदनशील साधक - श्यामसुन्दर 'बादल' 138
हिंदी पत्रकारिता को योगदान - जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी 143
अनुभवी पत्रकार की सिखावन - प्रेमनाथ चतुर्वेदी 144
सम्पादन-कला और चतुर्वेदीजी - जयदेव 151
फीजी के प्रति उनका प्रेम - शंकर प्रताप 153
घासलेट साहित्य - पं. गुणसागर 'सत्यार्थी' 157
एक अंतरंग भेंट-वार्ता - गौरीशंकर गुप्त 160
श्री वीरसिंह जूदेव का पत्र 167
पत्रकार और पत्र लेखक : बनारसीदास चतुर्वेदी - राजेश बादल 175
व्यक्तित्व झलकियाँ 178
182

Scanned with OKEN Scanner

H1634

पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

कृतित्व

- उपन्यास अंश
- संस्मरण
- रिपोर्ताज
- डायरी
- सम्पादकीय
- रेखाचित्र
- यादें
- पत्र

Scanned with OKEN Scanner

मेरे हृदय में सफल लोगों के प्रति श्रद्धा की भावना उतनी प्रबल नहीं रही, जितनी संघर्षशील, असफल लोगों के प्रति रही। यदि मुझे समय मिले तो मैं ऐसे असफल व्यक्तियों के पचास-साठ रेखाचित्र प्रस्तुत कर दूं, जो प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो सके।

.....

हिंदी जगत के सभी संघर्षशील लेखकों तथा कवियों के गौरव में ही मैं अपना कल्याण मानता हूँ।

.....

एक प्राचीन बौद्ध कवि आचार्य शांतिदेव ने कहा था - 'संसार के सभी प्राणियों के मुक्त होने पर मेरे हृदय में आनंदरूपी सागर की जो लहर उठती है, वही मेरे लिए पर्याप्त है, नीरस मुक्ति को लेकर मैं क्या करूँ।'

- बनारसीदास चतुर्वेदी

Scanned with OKEN Scanner